Padma Bhushan

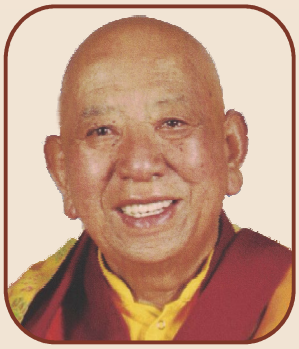

SHRI TOGDAN RINPOCHEY (POSTHUMOUS)

Shri Togdan Rinpochey, recognized as the reincarnation of previous Togden Rinpoches, a lineage rooted in the Drikung Kagyu tradition, is known for his contribution in Ladakh's spiritual and political spheres.

2. Born on 1st January, 1938 in Tibet, Shri Togdan Rinpochey received extensive teachings and empowerments. He held various leadership roles in Ladakh's monastic community and became a prominent spiritual figure. He embarked on a journey to Tibet, studying under renowned masters and receiving empowerments, transmissions, and teachings across different Buddhist traditions. He played an active role in Ladakh's spiritual and political spheres, serving as a Chos-rje and engaging in social activities. Throughout his life, he opened and revitalized sacred sites, performed miraculous deeds, and continued to bestow teachings and empowerments.

3. Shri Rinpochey was the President of Ladakh Gompa Association from 1972 to 1975. During this period, he attended International Buddhist Conferences held in Taiwan, Spain, Germany, Switzerland and France. Since 1959, he undertook various religious as well as social welfare activities in Ladakh and became a popular leader. He worked tirelessly for raising the consciousness among the Ladakhi populace for the need of good education, succeeding in sending many students to Srinagar and Jammu. The main task for him after his return from Tibet was to reorganize the approximately 50 various Drikung monasteries of Ladakh.

4. In 1967, Shri Rinpochey was elected as the Chairman of the Ladakh Action Committee, furthering the demands of Ladakh with the Indian Government. Under his leadership, the Committee was able to get ten demands accepted by the Government. Thus, he became a known political leader. For four years, he was also appointed as Vice-Chairman of the Ladakh Development Board. During this period, several developmental schemes were executed in far-off places in Ladakh. Among the most prominent achievements were Durbuk Canal, Alchi Bridge, High Schools and many Lower Schools, Medical Aid Centers at Temisgam, Sumoor, Man-Merak and Skurbuchen.

5. Shri Rinpochey was also President of National Conference Party, Leh and was nominated as MLC (Member of Legislative Council) in the Jammu and Kashmir Assembly and later elevated to Minister of State for Ladakh Affairs and Planning. As Minister of State for Ladakh Affairs and Planning, he took various steps for a speedier development of Ladakh.

6. Shri Rinpochey passed away on 24th May, 2023.

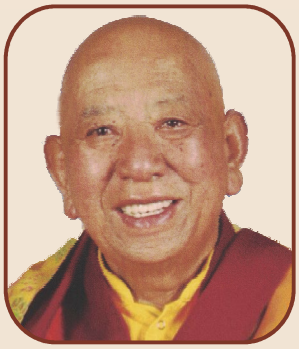

श्री तोगदान रिनपोछे (मरणोपरांत)

श्री तोगदान रिनपोछे, जिन्हें द्रिकुंग काग्यु परंपरा की वंशावाली के तोगड़ान रिनपोचे के अवतार के रूप में मान्यता प्राप्त है, को लद्दाख के आध्यात्मिक और राजनीतिक क्षेत्रों में उनके योगदान के लिए जाना जाता है।

2. 1 जनवरी, 1938 को तिब्बत में जन्मे, श्री तोगदान रिनपोछे को व्यापक शिक्षा और तपोबल प्राप्त हुआ। उन्होंने लद्दाख के मठवासी समुदाय में विभिन्न नेतृत्वकारी भूमिकाएँ निभाईं और एक प्रमुख आध्यात्मिक व्यक्ति बन गए। उन्होंने तिब्बत की यात्रा शुरू की, प्रसिद्ध गुरुओं के अधीन अध्ययन किया और विभिन्न बौद्ध परंपराओं में तपोबल, ज्ञान और शिक्षाएँ प्राप्त कीं। उन्होंने चोस–रजे के रूप में कार्य करते हुए और सामाजिक गतिविधियों में व्यस्त रहते हुए लद्दाख के आध्यात्मिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने पवित्र स्थलों को खोला और पुनर्जीवित किया, चमत्कारी कार्य किए, तथा शिक्षाएं और तपोबल प्रदान करना जारी रखा।

3. श्री रिनपोछे 1972 से 1975 तक लद्दाख गोम्पा संघ के अध्यक्ष थे। इस अवधि के दौरान, उन्होंने ताइवान, स्पेन, जर्मनी, स्विट्जरलैंड और फ्रांस में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध सभा में भाग लिया। 1959 से, उन्होंने विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कल्याण कार्य किए और एक लोकप्रिय नेता बन गए। उन्होंने लद्दाखी आबादी के बीच गुणवत्तायुक्त शिक्षा की आवश्यकता के लिए जागरूकता बढ़ाने के लिए अथक परिश्रम किया तथा बहुत–से विद्यार्थियों को जम्मू और श्रीनगर भेजने में सफल रहे। तिब्बत से लौटने के बाद उनका मुख्य कार्य लद्दाख के लगभग 50 विभिन्न द्रिकुंग मठों को मान्यता दिलाना था।

4. 1967 में, भारत सरकार से लद्दाख की मांगों को आगे बढ़ाने के लिए, श्री रिनपोछ को लद्दाख कार्य समिति के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। उनकी अध्यक्षता में, समिति सरकार से अपनी 10 मांगे मनवाने में सफल रही। इस प्रकार, वे एक विख्यात राजनीतिक नेता बन गए। चार वर्षों के लिए, उन्हें लद्दाख विकास बोर्ड का उपाध्यक्ष भी नियुक्त किया गया। इस अवधि के दौरान, लद्दाख के दूर–दराज के क्षेत्रों में विभिन्न विकासात्मक योजनाओं का कार्यान्वयन किया गया। इस अवधि की अनेक उपलब्धियों में दुर्बुक नहर, आलची पुल, उच्च विद्यालय और कई अवर विद्यालय, तेमिसगाम, सुमूर, मान–मेराक और स्कुरबुचेन में चिकित्सा सहायता केन्द्र सबसे प्रमुख हैं।

5. श्री रिनपोछे नेशनल कॉन्फ्रेंस पार्टी, लेह के अध्यक्ष भी थे तथा जम्मू और कश्मीर विधानसभा में एमएलसी (विधान परिषद के सदस्य) के रूप में नामित हुए थे और बाद में लद्दाख कार्य और योजना राज्य मंत्री के रूप में प्रोन्नत हुए। लद्दाख कार्य और योजना राज्य मंत्री के रूप में इन्होंने लद्दाख के तीव्र विकास के लिए विभिन्न कदम उठाए।

6. दिनांक 24 मई, 2023 को श्री रिनपोछे का निधन हो गया।